भोजपुरी लेखन में : डॉ० प्रभुनाथ सिंह के अवदान

प्रो० प्रमोद कुमार चौधरी विभागाध्य क्ष- भोजपुरी
विभाग पं० उगम पाण्डेwय महाविद्यालय
मोतिहारी,(पू० च०)

बहुआयामी व्य,क्त्वि के धनी डॉ० प्रभुनाथ सिंह भोजपुरी आंदोलन आ लेखन का विकास में कइल योगदान कबहू ना भूलावल जा सकेला। देश के दिशा आ दशा देवे खातिर सर्वोत्तम माध्योम बिया हमार मातृभाषा जवन हर जवान माई का दुध का संगे पीके जीअल बाड़न। एकरा अभाव में दुध कटू कहावे लगिहे। एने-ओने के फेटल पिअले लड़िका दुध कटू हो जइहे। रोग हरदम गरेसले रहीं। ई मातृभाषा के ही महातम बा जवना के पी के केहू सूर त केहू तुलसी बनल। रहीम, रसखान, रत्नाहकर जायसी बनल।

भोजपुरी लेखन के विकास में डॉ० प्रभुनाथ जी के काफी योगदान रहल। इहाँ का गीत-गवनई आ लिखे के अभिरूचि लरिकाइये से रहल। मिडिल आ हाई स्कूल के छात्र जीवन से ही कविता-गीत लिखे के जवन लक्म लागल ऊ इहाँ का जाले रहनी ताले जस के तस बनल रहल भोजपुरी लिखे के प्रेरणा "फिरंगिया" के अमर गायक प्राचार्य मनोरंजन प्रसाद सिंह से मिलल। महाविद्यालय पत्रिका "राका" में इनकर कविता "झिझिर-झिहिर पुरवईया" पहले-पहिल सन 1958 में छपल आ चर्चित भईल। तब से लगातार इहाँ के कलम चलत रहे। 1972 में "हीरा-मोती" नामक काव्यई संग्रह में इहाँ के कुछ कविता प्रकाशित भईल। इनकर आपन भोजपुरी काव्यद-संग्रह"ई हमार गीत" सन 1985 में जानकी प्रकाशन पटना से छपल। इहाँ के द्वारा-गद्य-लेखन के श्री गणेश सन 1985 में भईल। राँची से प्रकाशित दैनिक "राँची एक्सेप्रेस" में लगातार तीन बरिस तक इहाँ के व्यंनग्यम-कथा-कहानी निकलत रहल।

डॉ० प्रभुनाथ सिंह अंग्रेजी , हिन्दी ा आ भोजपुरी में सामान प्रौढ़ता से लिखलें। भोजपुरी में उनकर गीत कविता, कहानी, संस्मईरण,रिपोर्ताज ललित निबंध आ व्यंलग देखे,पढ़े आ सूने के मिलल बा। ओह सभ में से कुछ "ई हमार गीत" (कविता-संग्रह) गाँधी जी के बकरी "(ललित निबंध) हमार गाँव:हमार घर" (कहानी आ ललित निबंध के संग्रह) आ पत्र-पत्रिकन में पहिले प्रकाशित सामग्री बा। "पड़ाव" जवना में ललित निबंध, निबंध रिपोर्ताज, संस्मेरण आ कहानी मिलाके कुल 17 (सत्रह) शीर्षक में रचना बा। एह में छ: भोजपुरी आन्दो ालन के दशा आ दिशा

आ "अनाज के बादशाह चना " भोजपुरी सम्मेAलन पत्रिका (वर्ष 14 अंक 1-3 आ 6-7) में , "कजरी" विश्वे भोजपुरी सम्मrलन (26-27 नवम्बaर 2000) के स्मा रिका "भैरवी" में राजनेता आ साहित्य कार पूर्वांचल में आ रामशेखर बाबू का साथे बितल कुछ अविस्म रणीय क्षण रामेशेखर प्रसाद सिंह अभिनन्दमन ग्रंथ में प्रकाशित रहे। "साल में एक बार" अन्तो व चेखव के एगो रूसी कहानी के अनुवाद ह।[2]

डॉ० प्रभुनाथ सिंह के कविता के एह जादूई दूनिया में ठूंठी पकड़िया , तुलसी के चौरा , जटा बढ़वले भसम रमवले योगी रूप में सपना में आवे वाला प्रियतम , तरे-तरे के सगुन-असगुन , अँगना में उतरत कागा, बिरहिन के फड़कत बायाँ अंग, गंगा मईया के गोद, बाबा के पोखरा आ के घाट बन्हारवल के सवाल के आकुलात बचपन के इयाद सुपली मउनिया के खेल, चुनरी पाग आ लहँगा के राग बोध, पनघट के गगरी,नदिया पार के बालम, परदेश-जात पिया के संदर्भ आ जेवना ना जेइबे के ठनगन करत गोरिया आदि के चित्र के सहज सौंदर्य अनुभूति के जातीय अनुभूति के जातीय अनुभूति बनके आवत बा , एगो सो गहग अनुरंजन भरल वातावरण बनजात बा।

डॉ० प्रभुनाथ सिंह के पहिलकी कविता "लहर-लहर पुरवईया" में भी "बिन गरजे बरसलई अँखियाँ के स्थिति में बीच भँवर में छोड़ अकेला डूबल कही खेवईया" के एगो संदर्भ बा। 'भोर हो गईल' कविता में पीड़ा के एगो बहूते करूण बिंब बा। इहाँ के एगो पंक्ति देखी :-

सुसुकत छछनत मन के बोधि सकल ना केहू,
हरिहर दूबि के फुलुंगी पर।
अटकल ओस के बुन,
लोर छितरा गईल ।।[3]

इहाँ के लिखल "भिखईन" कविता करेजा के झकझोर देवे वाला बा –

काँपे भीख के दउरिया,
घूमी घर-घर दुअरिया।
सुनी काटल-काटल गरिया,
ना वाटे आसरा ।।

एह तरह से ढ़ेर सारा कविता लिख के डॉ० प्रभुनाथ जी भोजपुरी लेखन के भण्डा र भरत रही।
इहाँ के लिखल "ई हमार गीत" में बतीस गो कविता लिखले बानी।[4]
इहाँ का ढ़ेर सारा गजल लिखले बानी एकर एगो बानगी देखल जॉव :-

केतना मस्तीर बा जल-जल मरे में,
दर्द के याद पल-पल सहे में।
केतना आनन्द बिरह का घड़ी में,
उफा ना कह तड़प के रहे में॥

इहाँ के लिखल "हमार गाँव हमार घर" में इहाँ का सतरह गो कहानी लिख के भोजपुरी लेखन के क्षेत्र में काफी योगदान कइने बानी।[5]
इहाँ के लिखल "गाँधी जी के बकरी " में डॉ० साहेब के लिखल बाईस गो व्यंइग्य रचना संकलित बा। जवना में समाज के विभिन्ने समस्य न से सामाधान कर के लेखक ओह पर बड़ा सहज सरल ढ़ंग से आपन कमेंट करत एह समाजमें होरहल घटना के दिहले बानी जवन ई समाज भोग रहल बा।[6]
समय प्रबन्धलन में समय के दूरूपयोग करेवाला लोग के जीवन एगो बोझ बन जाला। मन बराबर अशान्तर रहेला। अईसन लोग के जीवन कबो सुखमय आ आनन्देमय ना हो पावे। अपना जीवन के अईसने लोग सुखमय बना सकेला जे समय के सदुपयोग करे आ कालबद्ध कार्यक्रम के रूपरेखा तईयार करके पूरा मुस्तै दी से अपने लक्ष्या का ओर कदम बढ़ावत चले। इहाँ के लिखल ढ़ेर सारा कविता, गजल, कहानी, निबंध भोजपुरी सम्मोलन पत्रिका आ कई पत्रिकन में छपल बा, जवन भोजपुरी लेखन के आन्दोसलन के विकाश में पूरहर काम कईले बा। इहाँ के लिखल बिहार विश्व विद्यालय भोजपुरी पद्य संग्रह आ गद्य संग्रह में कविता आ कहानी छपल बा। आगे-आगे मुक्त छन्दी के युग बोधी कविता संग्रह , जवना के सम्पावदक डॉ० रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तआव जी बानी एह में इहाँ के लिखल बा।[7]
एह तरह से डॉ० प्रभुनाथ जी भोजपुरी साहित्यि के भंडार भरे में जी-जान लगा के योगदान कइले बानी आ भोजपुरी लेखन कार्य के क्षेत्र में भोजपुरी के स्थामन दिलवले बानी जवन सराहनीय बा।

*****

संदर्भ ग्रंथ सूची -:

1. हमार घर : हमार गाँव
प्रभुनाथ सिंह ०डॉ -लेखक
जयकान्तं सिंह जय ०प्रो : परिचय
प्रभुनाथ सिंह पथ ०लोक भाषा प्रकाशन डॉ -प्रकाशक, पटना-800024, पृष्ठ 14 -, 15

2. पड़ाव
प्रभुनाथ सिंह ०डॉ -लेखक! "भूमिका"
विश्वो भोजपुरी सम्मेंलन-प्रकाशक, नई दिल्लीn

.3 प्रभुनाथ सिंह ०डॉभोज़पुरी आन्दो ोलन के प्रेरक व्यrक्तित्व
ओमप्रकाश सिंह -लेखक
राजर्षि प्रकाशन मुजफ्फरपुर -प्रकाशक,बिहार, पृष्ठ 113 -,114,115

.4 ई हमार गीत
प्रभुनाथ सिंह ०डॉ -लेखक
नन्द० किशोर सिंह -प्रकाशक, जानकी प्रकाशन अशोक राजपथ, पटना800004-, पृष्ट 18-

.5 ई हमार गीत
प्रभुनाथ सिंह ०डॉ -लेखक"गजल"
नन्द० किशोर सिंह -प्रकाशक, जानकी प्रकाशन अशोक राजपथ, पटना800004-, पृष्ट -33

.6 भ ोजपुरीआन्दोदलन के प्रेरक व्यrक्तित्वप्रभुनाथ सिंह ०डॉ :
ओमप्रकाश सिंह -लेखक
राजर्षि प्रकाशन मुजफ्फरपुर -प्रकाशक,बिहार, पृष्ठ -122

7. 2009 जनवरी :भोजपुरी सम्मोलन पत्रिका
ब्रजकिशोर ०प्रोसम्पाशदक, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्यr सम्मेथलनपटना 6-पृष्टt 32-

*****